॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अगस्त 2020 वर्ष 24, अंक 08 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2076-77 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

हर समस्या का समाधान वेद में ढूँढ़ें

❑ स्व. आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दु:खों का कारण माना गया है। इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ है क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है ठीक उसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतंजलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दु:खों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि वेदों की ओर लौटो। वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है अत: अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन-चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तर में लुप्त होती चली गई मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्यसमाज संस्था की यह विशेषता है कि वह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य ही नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रूचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता हैं यह एक अत्याधुनिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते चले जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक ओर आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकता वाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्तत: तृप्ति देने वाले नहीं हैं। इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है। मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हम में तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है.... अतृप्त है.... रो भी रहा है... तड़प भी रहा है मगर पुन:पुन: भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानो कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानो वेद कहता है-

अन्ति सन्तं जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति॥ (अथर्व 10-8-32)

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परमपिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है न कभी पुराना होता है।

इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्त से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक् अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख

(शेष पृष्ठ 14 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हम भी यज्ञ करें

योगीराज श्रीकृष्ण महाराज

एवम्

माता रूक्मिणी जी

के साथ प्रतिदिन यज्ञ करते थे।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर

आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं।

कुछ नशा तिरंगे की आन का है,
कुछ नशा मातृभूमि की शान का है।
हम लहराएंगे हर जगह ये तिरंगा,
नशा ये हिन्दुस्तान की शान का है।
स्वतन्त्रता दिवस की शुभकामनाएं

आर्य रतन
पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

अध्यक्ष डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति
प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

की ओर से समस्त आर्यजगत् को उपरोक्त उत्सवों की

हार्दिक शुभकामनाएं

कोरोना महामारी शिक्षक के रूप में

वर्ष 2020 आने वाले असंख्य वर्षों तक यादों में रहेगा। इस काल में मृत्यु को प्राप्त हुये सभी व्यक्तियों को श्रद्धासुमन अर्पित करते अपनी बात को आगे बढ़ाता हूं। प्रारम्भिक दिनों में यह एक साधारण महामारी लग रही थी कोई भी इसको गम्भीरता से नहीं ले रहा था। परन्तु विश्व स्तर पर प्रचार और भारत सरकार द्वारा किया जा रहे सफल प्रचार से लोगों में इस महामारी से लड़ने कि जागरूकता आई। इसमें सरकार द्वारा लिये जा रहे सख्त निर्णय भी सम्मिलित थे।

सरकार ने बड़ी समझदारी से तालाबन्दी को 15-15 दिन करके उसे आगे बढ़ाया ताकि लोग विचलित ना हो। कभी थाली कभी दीपक आदि को प्रचारित करके लोगों को धैर्य में रखती रही। यहां प्रधान सेवक की सूझ बुझ को भी साधुवाद देना होगा।

लगभग एक महीने से अधिक तालाबन्दी होने पर प्रभु की शिक्षा प्रारंभ हो गई। प्रकृति ने अपना सुहाना रूप दिखा प्रसन्न कर दिया। घर के छोटे बच्चों ने कहा हमने पहली बार नीला आकाश देखा है। कोई पाल्यूशन नहीं, किसी को खांसी नहीं जिनको सांस की बीमारी थी वह सुधरने लगी, सांस में ताजगी महसूस होने लगी। लोग जो कहते थे समय नहीं है वे भी प्रातः भम्रण प्रारम्भ कर दिया मास्क लगा कर, दिल्ली के मौसम विभाग के वैज्ञानिकों ने गोराईयां चिड़िया दिल्ली से लुप्त हो गई है कि घोषणा कर दि थी, परन्तु तालाबन्दी के दो महीने बाद वह चिड़िया भरपूर मात्रा में देखी और सुने जाने लगी। लोग पिंजरे में बन्द चिड़िया खरीदते थे भारी दाम देकर। परन्तु सभी प्रकार की चिड़िया और विशेष कर हर प्रकार के तोते भी डालियों पर देखे और सुने जाने लगे। मैं चकित रह गया जब मैंने कोयल की आवाज प्रातः अपने घर के बाहर आंगन में सुनी। इस मधुर दृश्य और सुरीली पक्षियों की चहचहाहट सुनते ही प्रकृति दान जो प्रभु ने दिया, उसका धन्यवाद मन से किया। कुछ देर तक मैं कुर्सी लेकर वहीं सुनता रहा और आनन्द लेता रहा। यह प्रक्रिया केवल प्रातः ही नहीं अपितु दिन और सायंकाल भी अनुभव करने को मिला और निरन्तर कई सप्ताह तक इस प्राकृतिक सुन्दरता को दिल्ली जैसे शहर में सीमेन्ट से बने जंगल में हम सब भूल चुके थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने अपने अपने शहरों में भी ऐसा आनन्द लिया होगा। यह तो रही प्रकृति की बात अब आगे बढ़ते है।

प्राकृतिक रूपी सौन्दर्य के बाद कोरोना एक और सीख दे रहा था वह थी परिवारिक समन्वय, संगठन और प्रेम का सन्देश। भरपूर समय की उपलब्धता के बीच परिवारिक समन्वय का आनन्द भी प्राप्त हुआ। घर के बुजुर्गो के साथ उनकी दिनचर्या के अनुसार सम्मलित होकर बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। परिवारिक सम्बन्ध और संगठित हुये बच्चों के साथ बिताये समय का एहसास बच्चों के चेहरों पर पढ़ा जा सकता था और परिवार के साथ व्यतीत किये समय की कीमत और अनिवार्यता अब हमारे मनों में धर कर गई है। सुबह बच्चों के उठने से पहले घर से चले जाना और उनके सोने के बाद आने वाली जिन्दगी में हमने क्या कुछ खो दिया है यह बच्चों की खुशी और उत्साह ने हमें समझा दिया था।

अधिक समय खाली होने के कारण कुछ करते रहो के नियम अनुसार कुछ पति रसोई में पत्नियों की सहायता करते दिखे। अपना समय बिताने की मजबूरी बहुत से परिवर्तन लेकर आई। पत्नी के मुख मण्डल पर इस सहायता/सहयोग के लिए मन ही मन पत्नी प्रसन्न हो रही थी। इस पारिवारिक समन्वय को बढ़ावा मिला। इसी तरह बच्चे भी प्रसन्न दिखें कई ऐसे भी प्रसंग देखने सुनने में आये कि तलाक तक की नौबत वाले पति-पत्नी में सुलह हो गई और समन्वय की स्थापना हुई।

पड़ोसी के महत्व को भी अनुभूति का अनुमान हुआ। तालाबन्दी में देखने को मिला कि अपनी और पड़ोसी की रसोई जैसे एक ही हो गई। (विशेष कर तालाबन्दी के प्रथम 30 दिन)। घरेलू नुस्खे एवं प्राकृतिक उपचार के नाम पर पड़ोसी एक दूसरे को रसोई में उपलब्ध (दालचीनी, लोगं, सौंफ, सुखे आंवले, सुखा अदरक आदि) समान का लेने देन करते दिखे। किसी के घर के बाहर गिलोय की बेल (अमर बेला) लगी हुई थी तो उसे एक दूसरे को भेज काड़ा बनाने को प्रेरित किया। किरायेदार से किराया आधा लेने पर मालिक मकान और किरायेदार के रिश्तों की खटास खत्म हुई।

हम देखते है कि कितनी सारी सीख कोरोना महामारी हमे दे गई। सभी कुछ हमारे मन मस्तिष्क में ही था लेकिन करोना ने उससे धूल मिट्टी उतार दी और पर्दा उठा दिया। सारे समाज में एकजुटता है। वह अस्मरणीय थी मुझे ऐसा लगता है कि प्रभु जो अपने बच्चों से आशा रखता है वह ना होते देख उसने यह सब कुछ किया हो। प्रकृति के प्रति सावधान, नदियाँ जिस प्रकार स्वच्छ साफ और निर्मल हो गई, जिसे सरकारे नहीं कर सकी उसे प्रकृति ने कर दिखाया। बड़े-बड़े बजट से सम्भव नहीं हो पाया वह प्रभु कृपा से हो गया, पक्षी लौट आए, प्रदूषण खत्म हो गया, जल स्वच्छ हो गया, आपसी सम्बन्ध सुधर गये, बहुत शराब पीने वालों को ऐसा लगता था कि वह इसके बिना नहीं रह सकते लेकिन दो महीने शराब की उपलब्धता ना होने के कारण उनके अन्दर आत्मविश्वास हुआ कि इसके बिना भी हम रह सकते है और शराब को छोड़ दिया। ऐसा लग रहा था कि प्रभु ने जैसे स्वर्ग के दर्शन करा दिये हो और समझा दिया कि ऐसा स्वर्ग अगर चाहते हो तो मेरी प्रकृति को सम्भाल के रखे इसे खण्डित और नुकसान ना पहुंचाएं।

आओ संकल्प ले कि प्रभु द्वारा कोरोना काल में दी गई शिक्षा को समझ कर प्रकृति और पृथ्वी को बचाएं।

अजय टंकारावाला

टंकारा समाचार ई-मेल और सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र ''टंकारा समाचार'' अब आधुनिक माध्यम से भी उपलब्ध है। माननीय पाठकों द्वारा दिए गए सुझावों एवम् टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा निर्णय लिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा डाक अव्यवस्थित रूप से प्रति माह ना मिलने पर असंतोष प्रकट किया जा रहा था। आप सभी को टंकारा समाचार मासिक बिना किसी रूकावट के प्राप्त होता रहेगा। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपना सदस्यता संख्या एवम् नाम के साथ अपना ई-मेल अथवा वट्सअप नम्बर भेजने की कृपा करें। उपरोक्त सूचना आप मोबाइल नम्बर 9560688950 पर भेज कर पंजीकृत करा सकते है जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक

गायत्री

❒ त.शि.क. कण्णन

भारतीयों संस्कृति की परिभाषा नितान्त गहरी है। जो इतर तत्वों को लेकर पवित्रता प्रदान करती है वे सब तत्व ही संस्कृति की स्थापिका हैं। हमारी संस्कृति के अनेक घटक हैं, जिन्होंने विश्व के अध्यापकों को अपने वर्चस्वी आदर्शो से जीवन शुद्धि और जीवन की समृद्धि से, आत्मीयता के अबाध बन्धन में अनुस्यूत किया हुआ है। कविवर कालिदास की यह पंक्ति कितनी सुहावनी तथा हृदय प्रेरक है।

''सर्व कान्तमात्यीयं पश्यति'' सभी विद्वान् आत्मीयता की लाधवता का आद्र करते हैं। क्योंकि पुराने शास्त्रों में दैवी भावना है। हमारे वेद हमारी स्थापना को महत्व देते हैं। **''विद्ययाभृतमश्नुते''** मानव ज्ञान से अमृतत्व को प्राप्त करते हैं। हमारे दिव्य ग्रन्थ वेद हमारी भावना को सत्कार करते हैं। अथर्ववेद यह पंक्ति कितनी प्रांजल है। **''अमृतं न ऐतु''** हमें अमृत पद की स्थिति उपलब्ध हो। ईशा उपनिषद् की अर्थपंक्ति कितनी सुहाती है। हमारे कठ उपनिषद की यह पंक्ति कितनी मार्मिक है। **''अ एतद् विदुः अमृतास्ते भवन्ति''** जो तत्वदर्शी ब्रहम से सुपरिचित हैं, उनकी उन्नतपरक भावना कितनी सर्वोतम है। तब हमारे सुमेधा पूरित यशस्वी विद्वान् चाणक्य की यह पंक्ति कमनीय है। **''यत् सारभूतं तदुपासनीयम्, हंसो यथा क्षीर निवाम्बु मध्यात्''।** जो कुछ ठोस वृत्ति पठनीय है, उसे ग्रहण करना चाहिए जैसे हंस जल मिलावट दूध में से दूध को प्राप्त करता है। उसी प्रकार इस दिव्य वृत्ति को ग्रहण करना नितान्त आवश्यक है। मनुस्मृति की उक्त पंक्ति कितनी उर्जस्वी है। **''सा विन्यास्तु परम नास्ति पावनं परमं स्मृतम्''।** गायत्री एक दिव्य मन्त्र है, गायत्री का अद्यतन कोई मन्त्र इतना लोकप्रिय नहीं है, जैसे गायत्री की पंक्तियां हमें प्रभु में आश्वत करती हैं। यह गरिमामय शब्द ही मानव के मन को समृद्ध करते हैं। प्रभु प्रार्थना की प्रखर वृत्ति यही है कि हमें सद्बुद्धि प्रदान करें। गायत्री सद्बुद्धि का ओजस्वी मन्त्र है। इस मधुर व प्रधान पंक्ति के वाचन से प्रभु के प्रति प्रीति प्रशस्त होती है व पवित्र होती है। हमारे भारतीय तत्व के अनेक घटक हैं, जैसे गंगा गायत्री, गीता, गाय और गुण। ये पंचतत्व ही हमारी भारतीयता के प्रेरक हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि इन घटकों से हमारे ज्ञान की वृद्धि होती है। ये पंच तत्व ही हमारी आध्यात्मिक वृत्ति को परिभार्जित करते हैं। संस्कृति की महत्ता इस बातमें निहित है कि हमारे राष्ट्र का चरित्र कितना महिमा मण्डित हुआ है साथ ही हमारी विनयता, दयालुता चरित्रता के प्रगाढ़ होने से हमारी संस्कृति का विकास होता है, हमारी संस्कृति का प्रथम पाठ है:-

''सर्वत्र करूणा पूर्णा सत्यवर्दिनः सर्वभूत दयावन्तः ते शिष्टाः सर्व पूर्णिताः। गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री तेन उच्यते।

गायक की रक्षक होने से यह गायत्री की रक्षक कहलाती है। **''गायत्री वाग् वा इदं सर्व भूतं गायति त्रायते च यः''** गायत्री ही सम्पूर्ण संसार का रूप है। गायत्री का शुद्ध उच्चारण ही सम्पूर्ण संसार का रूप है। गायत्री का शुद्ध उच्चारण मधुरवाणी से ही सम्भव है। प्रभु की स्तुति का सर्वश्रेष्ठ रूप है। गायत्री का शुद्ध उच्चारण मधुरवाणी से ही सम्भव है। प्रभु की स्तुति का यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है। भक्त की रक्षिका है। ''छान्दोग्य उपनिषद्'' **सा हेसा गवांस्त्रे। प्राणावै गयस्तान् प्राणां स्तत्रे। तद! यत् गयां स्तये तस्मात् गायत्री नाम वृहहद्द्रण्यक उपनिषद् गायत्री वेदमाता गायत्री पापदिनाशिनी गाय त्र्यास्तु परन्नारित्त दिवि चेहच पावनम् वशिष्ट** ऋषि का कथन

मानवता

मानवता का सम्यक अध्ययन ही मानव की परिधि में समाविष्ट है। मानवता पूर्णिमा वर्चस्व भरी चन्द्रमा की कृति में है। जो मनुष्य को सहजता से सुहाती है। तब चन्द्रमा मानव वृत्ति का परिचायक होता है। बालकों से लेकर वृद्ध पुरुष तक चन्द्रमा की सुन्दरता से, मनमोहकता से प्रभावित होते हैं। वे उसे प्रकृति का नहीं अपने परिवार का एक अंग समझते हैं।

चन्द्रमा ही नहीं, सूरज भी अपने प्रातः कालीन मनोरम स्वरूप से सबको प्रियता प्रदान करता है। प्रकृति के इन दोनें स्वरूपों की मानव की ममता परिपूर्ण अंश में स्वाभाविक प्रीति से चन्द्रमा और सूरज अपने परिवार का एक अंग समझती है। चन्द्रमा अपनी मनभावक सुन्दरता से सबको अपना लगता है। संस्कृत की एक पंक्ति है। ''उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम'' सुन्दर वही हो सकता है, जो सबको अपना लगता है, सभी को अपना समझता है। मानवता का प्रतीक प्रातः कालीन सूर्य की कमनीयता को हम स्वाभाविक रूप से देख सकते हैं। वहीं पूर्णिमा के चन्द्रमा प्रतिपल देखकर भी नहीं ऊबलते हैं। मानवता का गुण इसी में है। कि मनुष्य की प्रीति की परतों को सुहाता है। मानवता प्रभु प्रीति का एक तत्व है। संस्कृति की प्रीति सर्वप्रिय होती है। स्वभाव में शक्तिमभा, मानसिक वृत्ति प्रीति का प्रत्येक क्षण अब मानवता में रोपित है। इसीकारण हम लाघवता से मानवता को अपना समझते हैं। मानवता मानव की ऊर्जा से देशभक्ति, प्रीति के प्रांगण में अपना समझते हैं। बस यहीं वर्चस्विता से आराध्य वृत्ति है। मानवता हमारी ममता मनोमय वृत्ति का सूचक है। मानवता की उच्च भावना हम सबको प्रियता प्रदान करती है। मानवता की वृत्ति को समझने के लिए मानव होना जरूरी है आवश्यक है।

– त. शि.क. कण्णन, चैन्ने-18

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **–प्रबन्धक**

शांति संधि के प्रस्तोता-योगिराज श्रीकृष्ण

❐ स्व. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

कई लोगों का अभिमत है कि श्रीकृष्ण यदि चाहते तो इस भयंकर युद्ध (महाभारत) को रूकवा सकते थे। उन पर कुछ लोग यह भी दोषारोपण करते हैं कि श्रीकृष्ण ने जीवनभर लड़ाईयां लड़ी। उनके इस स्वभाव के कारण ही कौरव-पांडव का यह भीषण महाभारत युद्ध हुआ। युद्ध का परिणाम सभी जानते थे, किन्तु श्रीकृष्ण की ओर से जोरदार पहल नहीं हुई। उसके परिणाम से यह महान् भयंकर विश्व युद्ध हुआ। ऐसे दोषारोपण करने वालों के समक्ष हम श्रीकृष्ण का वह रूप और प्रयास प्रस्तुत कर रहे हैं जिसे जानकर हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि श्रीकृष्ण ने 'दूत-कर्म' को स्वीकार कर धृतराष्ट्र, दुर्योधन, भीष्म आदि कौरव-रत्न को आहत न करने का प्रयास किया। उनके सत्प्रयासों का यह परिणाम था कि दुर्योधन तथा शकुनि को छोड़कर शेष सभी युद्ध न कर पाण्डवों को उनके अधिकार देना चाहते थे। श्रीकृष्ण के इस महान प्रयास से सिद्ध होता है कि वे विश्व में प्रथम श्रेणी के शांति संस्थापक थे।

द्रौपदी की करूणामय कहानी सुनकर श्रीकृष्ण का हृदय द्रवीभूत हो गया। उन्होंने उसे धैर्य बंधाते हुए कहा, देवि! आंसुओं को पोंछ ले। तेरे पुण्यों से तेरे दु:खों की समाप्ति हो गई है। तेरे क्रोध से सभी शत्रु भस्म हो जायेंगे। मैं हंसराज युधिष्ठिकर की आज्ञा से तथा इन सभी भाईयों की सहायता से तेरे क्रोध को शान्त करने का प्रयास करूंगा। देवी! तुम धैर्य रखो।

प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर श्रीकृष्ण कार्तिक शुक्त पक्ष, रेवति नक्षत्र को सूर्योदय होते ही शैव्य, सुग्रीव, मेघ पुष्प तथा बलाह, नामी घोड़ों को अपने रथ में जोतकर तथा ध्वजा पताका लेकर चल पड़े। उनके साथ एक हजार घुड़सवार, एक हजार पैदल योद्धा, सात्यकि तथा कृतवर्मा आदि अंगरक्षक थे। ब्राह्माणों ने उनकी सफलता के लिए स्वस्तिवाचन कर उनकी सफलता का आशीर्वाद दिया। अभी वे चले ही थे कि धर्मराज युधिष्ठिर ने उनके निकट जाकर कहा-यदि हमारी जननी जीवित हो तो उनके पुनीत चरणों में हमारा प्रणाम कहना। हमारी माता ने श्वसुर कुल के लिए, श्वसुर कुलवालों की ओर से दिये गये अनेक कष्ट सहे। उन्हें हमारा सादर प्रणाम कहना।

कई लोग समझते हैं कि श्रीकृष्ण पांडव को सन्देश ले जाने वाले 'दूत' मात्र होंगे। ऐसा नहीं, किंतु वे भारत के प्रभावशाली तेजस्वी नेता थे और शांति स्थापना के लिए सात्यकि आदि यादवों की चुनी हुई मण्डली के साथ गये थे। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर अपने पद की गौरव-गरिमा के अनुरूप ही शांति स्थापित करने का पुरुषार्थ-प्रयत्न किया। किंतु फल सदा ईश्वराधीन होता है।

श्रीकृष्ण की हस्तिनापुर की यात्रा का समाचार गुप्तचरों द्वारा धृतराष्ट्र, दुर्योधन आदि को मिल गया। कौरव राजसभा द्वारा उनके स्वागत आदि का बड़े भव्य रूप से प्रबन्ध किया गया। पूरे नगर को सजाया गया तथा उन्हें 'वृकस्थल' पर ठहराने का समुचित प्रबन्ध किया गया। उन्हें भेंट आदि देने का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। यहां विदुर जी ने स्पष्ट रूप से कौरवदल के प्रमुखों को समझाते हुए कहा था-''श्रीकृष्ण सब प्रकार से गुणी, मानी तथा सत्कार, अभिनन्दन के योग्य हैं। विशेषकर अब सारे देश के हित वे शांति कराने आ रहे हैं। पर स्मरण रखना है कि वह निस्वार्थी महात्मा और अदम्य महापुरुष हैं। इन सारे प्रलोभनों का उन पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। वह कोई भी भेंट स्वीकार नहीं करेंगे। भीष्मजी ने भी विदुर से सहमति प्रकट करते हुए कहा-''यह निर्विवाद सत्य है कि वे महापुरुष हैं। उन्हें सत्कार, असत्कार, मानापमान आदि उनके उद्देश्य से डिगा नहीं सकता। आप अपना धर्म सम्मत कर्तव्य का पालन करें। हम सभी के वे आदरणीय हैं।''

श्रीकृष्ण जी सूर्योस्त समय वृकस्थल पर पहुंचे। सायंकालीन नित्यकर्म जैसे स्नान, संन्ध्या, यज्ञ आदि करने हेतु चले गये। उनको आता देख, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि सभी गणमान्य उनका अभिनन्दन करने पहुँच गये। उन्हें आदर के साथ महाराज धृतराष्ट्र के वन में स्वर्णसिंहासन पर बैठाया गया। आवश्यक शिष्टाचार के पश्चात् वे विदुर के भव्य भवन में विश्राम हेतु चले गये। वहां उन्होंने उनके घर पर ही षड्रस युक्त, स्वादिष्ट भोजन किया। उसी दिन तीसरे प्रहर श्रीकृष्ण कुन्ती भवन गये। उन्होंने कुंती माता का दर्शन कर धर्मराज युधिष्ठिर का पाद-वन्दन आदि सन्देश कहा। उन्हें देखते ही कुन्ती बिलख-बिलख कर रो पड़ी। उसे अपने पिछले कष्ट याद हो आये। श्रीकृष्ण ने उन्हें धैर्य बंधाया। इसके बाद कुंती ने धर्मराज, सभी भाईयों तथा पुत्रवधू कृष्णा (द्रौपदी) का कुशलक्षेम पूछा। तब श्रीकृष्ण ने उनके अपने आने का मुख्य प्रयोजन बताया। कुछ देर ठहरकर जब वे वहां से चलने लगे, तब कुन्ती ने कहा-वृष्णिनन्दन! यदि संधि का अवसर आ पड़े तो जो हित और पत्थ्य हो, कर लेना। किन्तु-''अविलोपेन धर्मस्य अनिकृत्या परंतप'' अर्थात कोई काम ऐसा न करना जिसमें धर्म को लोप होने या दलन का आश्रय लिया गया हो। मैं धर्म में प्रगाढ़ आस्था रखती हूँ।

कुन्ती से विदा होकर शौरि (कृष्ण) दुर्योधन के भवन में गये। वहां भी उनका यथोचित सम्मान हुआ। वहीं पर शांति हेतु विचार-विमर्श हुआ। चलते समय दुर्योधन ने घरेलू भोज ग्रहण करने के लिए कहा। उन्होंने इस निमंत्रण को अस्वीकार करते हुए कहा-मैं दूत हूँ। कृतार्थ होने पर भोजन करने का मेरा अधिकार है, बिना कृतकार्यता के नहीं। भोजन या तो प्रीति से किया जाता है या विपत्ति में। तुम्हारे में प्रीति नहीं है और हम विपत्ति में भी नहीं हैं। जो धर्मात्मा और अधिकार वालों का अधिकार दबाते हैं वे हमारे दोषी हैं। इसलिए मैं आप किसी का अन्न खाकर महात्मा विदुर के यहां आकर भोजन किया। रात्रि को उनसे कहा-''मैं कौरवों के पिछले कर्मों और स्वभावों को जानता हूँ। यह निश्चित है कि युद्धसे नाश अवश्य होगा। इस महानाश से बचाने को महान पुण्य समझ शक्ति भर शुद्ध चित्त से मैं शांति के लिए प्रयत्न करूंगा। क्योंकि यह मेरा धर्म है।'' इसमें यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि श्रीकृष्ण विश्व शांति के घोर समर्थक थे।

दूसरे दिन राजसभा में चलने के लिए दुर्योधन स्वयं उनके पास आया। वे अपने साथ विदुर को रथ में बैठाकर राजसभा में आये। सभापति की आज्ञा से श्रीकृष्ण जी ने प्रस्ताव रखते हुए कहा-

कुरूणां पांडवनां च शमः स्यादिति भारत।
अप्रणाशेन वीराणामेतद्याचित मा गतः॥ (15-3)

धृतराष्ट्र महाराज! मैं शांति (संधि) की भीख मांगने आपने द्वार पर

आया हूँ। जिस प्रकार कौरव और पांडव दोनों में किसी का भी नाश न हो ऐसा उपाय आप कीजिए। शांति की स्थापना कोई दुष्कर कर्म नहीं यिद आप चाहें। यह आपके और मेरे वश में है। आप अपने पुत्रों को समझावें, मैं पांडवों को समझा दूँगा। स्वत्व किसी का न मारा जाय, किंतु दोनों में आधा-आधा राज्य बांट कर संधि करा दें। इससे आपका बल इतना बढ़ेगा कि आप (धृतराष्ट) सारे जगत को जीत कर शासन कर सकेंगे। पिछली बातों को जानता हुआ भी धर्मात्मा युधिष्ठिर प्रजा का नाश न हो। इसलिए सबको भुलाने को तैयार है। हे राजन् धृतराष्ट्र! आप भी अपने कुल, पुत्र और प्रजा के हित के लिए पुत्रों को समझाकर न्यायसंगत शांति का यत्न करें।'' इसका यह भी तात्पर्य मत समझना कि पांडव युद्ध से डरकर मुझसे शांति प्रस्ताव करा रहे हैं। वे तो संधि हो जाय तब आपकी सेवा करने को तैयार हैं, यदि युद्ध छिड़ जाये तब वे युद्ध के लिए भी तैयार हैं।''

प्रस्ताव सुनाने के पश्चात् पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद धृतराष्ट्र ने कहा-कृष्ण, चाहते तो हम भी यही हैं, किन्तु यह दुर्योधन के हठ से हम व्याकुल हो रहे हैं। भीष्म द्रोण, कृप और गांधारी बार-बार इसे समझाते हैं, किन्तु यह मानता नहीं है। यह सुनकर श्रीकृष्ण जी ने भी दुर्योधन को बहुत समझाया। श्रीकृष्ण, भीष्म, विदुर आदि के समझाने पर भी दुर्योधन नहीं माना। जब गांधारी उसे समझा रही थी, तब वह राजसभा से उठकर शकुनि के पास चला गया। वहाँ दुर्योधन ने शकुनि से कहा-इस यादव के आने से हमारे विरूद्ध सबका क्रोध उभर रहा है। अत: अच्छा हो कि इसे पकड़कर कहीं बन्दरी बना लिया जाये। सात्यकि को इस षड्यंत्र की भनक पड़ गई और उन्होंने कृतवर्मा को सचेत कर दिया। यह जानकर श्रीकृष्ण ने सिंह के समान दहाड़ते हुए कहा-ये मूढ़ मुझे अकेला समझ आक्रमण करना चाहते हैं, किन्तु इन्हें मालूम नहीं, यहां मेरे रक्षक कौन और कैसे हैं? समझ लो कि पांडव वं सभी यादव यहां विद्यमान हैं। यह सुनते ही चाण्डालों की घिग्घी बंध गई। श्रीकृष्ण सभा से उठकर माता कुन्ती के पास चले गये और उन्हें सब बातें बताई। वहां से चलकर वे आगे बढ़ लिये। यद्यपि वे इस प्रयास में पूर्णत: सफल नहीं हुए किन्तु उन्होंने मन में एक और युक्ति सोची।

उन्हें मालूम था कि दुर्योधन की मति मारी गई है और वह केवल कर्ण के आश्वासन के आधार पर ही अपनी अकड़ बता रहा था। उन्हें यह ज्ञात था कि कर्ण कुन्ती के कौमार्यकाल का कनीन पुत्र था। इसकारण वह महाराज युधिष्ठिर आदि का सबसे बड़ा भाई था। कुन्ती से विदा होकर वे कर्ण को अपने रथ में साथ ही बैठा लाये। उन्होंने कर्ण को युद्ध के सारे कुपरिणाम बताकर यह बात की-कर्ण! तुम कुन्तीपुत्र होने के कारण कौरव और पाण्डव तुम्हारे छोटे भाई हैं। यदि देखा जाय तो सबमें बड़े भाई होने के कारण राज्य पर तुम्हारा अधिकार है। युधिष्ठिर तुम्हारा बहुत प्रशंसक है। अत: तुम मेरे साथ चलो वहां राज्याभिषेक की पूरी तैयारी है-वहां वे पांचों भाई तुम्हारा राज तिलक कर तुम्हें पृथ्वीपति बना देंगे। इससे दो लाभ होंगे प्रथम तो विनाशकारी युद्ध नहीं होगा, दूसरे तुम्हारा अभ्युत्थान हो जाएगा। यह सुनकर कर्ण ने माता कुन्ती को जननी तो स्वीकार किया किन्तु नदी में बहाने के कारण उसने अपने प्राण रक्षक अधिरथ और उसकी पत्नी राधा को अपने माता-पिता कहा। इधर दुर्योधन ने उसे गरिमामय प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी थी। इस कारण वह उनके प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट कर कृतघ्नता के पाप से दूर रहना चाहता था। अन्त में कर्ण ने कहा-विदितं में ह्राषीकेषं यतो धर्मस्ततोजय: 1943-36 कृष्ण मैं अपने साधु भाई युधिष्ठिर के प्रति अपार श्रद्धा रखता हूँ। किन्तु मैं वहां नहीं जा सकता। यह दो टूक उत्तर सुनकर श्रीकृष्ण ने अन्त में कहा-''कर्ण! यदि बिना युद्ध के धर्मराज को अधिकार नहीं मिल सकता तो, द्रोण, भीष्म से कह देना कि युद्ध के लिए यह अच्छा समय है, खेती कट चुकी है। आज से मार्गशीष की अमावस्या आने पर 8वें दिन, रणदुन्दुभी बजाकर निपटारा करा लेना। मेरा यही अन्तिम निश्चय है।'

इसके पश्चात वे प्रसन्न मुद्रा में पाण्डवों के पास आये और युद्ध की तैयारी करने का विचार प्रकट किया। संस्कृत के कवि ने दुर्योधन की हठपूर्ण मति परख कर ही कहा था-विनाशकाले, विपरीत बुद्धि:। इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि महाराज श्रीकृष्ण युद्ध के विरोधी और शांति के प्रबल समर्थक थें वे विश्व में युद्ध होते हुए देखना नहीं चाहते थे।

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यो की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 18,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

लाहौर की दो प्रमुख आर्य समाजें
आर्यसमाज अनारकली एवं आर्यसमाज वच्छोवाली

❐ स्व. विश्वनाथ

पाकिस्तान बनने से पहले पंजाब की दो प्रमुख आर्यसमाजें थीं जहां से पंजाब ही नहीं, किसी सीमा तक देश भर के आर्यजगत् की गतिविधियों की कल्पना की जाती थी और उन्हें साकार किया जाता था। आर्यसमाज अनारकली आर्य प्रादेशिक सभा की प्रमुख समाज थी उसके प्रेरणा स्रोत महात्मा हंसराज जी थे। दूसरी थी–आर्यसमाज वच्छोवाली जिसकी धुरी थे महाशय कृष्ण जी जो दैनिक प्रताप और साप्ताहिक प्रकाश के सम्पादक और संचालक थे।

आर्यसमाज अनारकली–पहले आर्यसमाज अनारकली की बात करूंगा। क्योंकि मेरा घर और कार्यालय, 'आर्य–पुस्तकालय' दोनों अनारकली बाजार के साथ लगती हुई हस्पताल रोड पर स्थित थे इसलिए विशेष आयोजन हो तो अनारकली समाज में जाता ही था। नाम तो अनारकली था परन्तु समाज अनारकली बाजार में नहीं थी। वह निकट की ही एक सड़क गणपत रोड पर बहुत बड़े भवन में स्थित थी। आर्यसमाज का अपना विशाल भवन था। इसकी ऊपरी मंजिल पर दैनिक उर्दू मिलाप का कार्य चलता था जिसके सर्वेसर्वा महाशय खुशहाल चंद खुर्सन्द जी थे जो उन दिनों भी अपना पूरा समय आर्यसमाज को देते थे और बाद में संन्यास लेकर जिन्होंने महात्मा आनन्द स्वामी के नाम से आर्यसमाज की अविस्मरणीय सेवा की। गणपत रोड पर ही एक मकान की पहली मंजिल पर उर्दू साप्ताहिक 'आर्य गजट' का कार्यालय था जिसके संपादक महात्मा हंसराज जी थे। कालान्तर में लाला खुशहाल चंद जी सम्पादक बने। उन दिनों उर्दू का बोलबाला था, उर्दू ही राजभाषा थी, इसलिए आर्यसमाज के समाचार पत्र भी उर्दू में ही छपा करते थे।

आर्यसमाज अनारकली में प्रवेश करने के लिए एक बड़े गलियारे में से गुजरना पड़ता था। इसे पार करके एक बड़ा आंगन और इसके बाद आर्यसमाज का विशाल भवन। अतिथियों के ठहरने के लिए कुछ कमरों की व्यवस्था थी। वहीं मैंने पहली बार वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी के दर्शन किये थे। रविवार के साप्ताहिक सत्संग में डी.ए.वी. आंदोलन से जुड़े सभी प्रमुख व्यक्ति नियम से आते थे जिनमें जस्टिस मेहरचंद महाजन प्रिंसीपल श्री जी.एल.दत्ता, प्रिंसीपल मेहर जी, बक्षी रामरतन जी, लाला सूरजभान जी, प्रो. दीवानचंद शर्मा, प्रो. चारूदेव जी, प्रो. ए. एन. बाली आदि अनेकानेक महापुरुष नियम से आते थे। महात्मा जी अपनी उपस्थिति से सदा यह संदेश देते थे–सत्संग में आना बड़ा महत्वपूर्ण है। उनके अपने उच्च उदाहरण से भी सभी प्रभावित होते थे। उन दिनों उपस्थिति बहुत अधिक होती थी और पूरा हाल भर जाता था। कार्यक्रम की शुरुआत तो वैसी ही होती थी जो आज है। पहले यज्ञ, फिर प्रार्थना, वेद प्रवचन, सामयिक, विषयों पर भाषण और बाद में मन्त्री द्वारा आर्यसमाज की गतिविधियों की सूचना और समाचार। मेरी स्मृति के अनुसार इस विशाल भवन में बिजली के पंखे लगे हुए थे। बड़ी बात यह है कि सभी आर्यपुरुष अपनी आंतरिक प्रेरणा से नियमपूर्वक साप्ताहिक सत्संग में बड़े उत्साह से भाग लेते थे।

पाकिस्तान बन जाने के तीन चार वर्ष बाद मुझे पाकिस्तान जाने का अवसर मिला। वहां आर्यसमाज मंदिर अनारकली की जो दुर्दशा देखी, हृदय रो उठा। मंदिर के भव्य भवन को मुसलमान शरणार्थियों का अड्डा बना दिया गया था। मंदिर के चारों ओर गंदगी फैली थी। मंदिर के सबसे ऊपर जो गुम्बद था, जिस पर ओ३म् ध्वज फहरा करता, वह टूटा हुआ था। सीलन और दुर्गन्ध में ही वहां लोग रहे थे। जैसे भारत वर्ष में महात्मा गांधी ओर नेहरू जी ने मस्जिदों की रक्षा के लिए पूरी शक्ति लगा दी थी कि पंजाब से आने वाले शरणार्थी वहां घुस न पायें, वैसे पाकिस्तान ने क्यों नहीं किया। वहां तो डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर का नाम भी बदलकर इस्लामिया कॉलेज रख दिया गया और प्रवेश द्वार में घुसते ही कॉलेज के बड़े लान में सफेद संगमरमर की नई मस्जिद बना दी गई। इन सब बातों पर अलग से लिखूँगा। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में कभी–कभी प्रिंसीपल दीवानचंद जी (कानपुर वाले), सर गोकुल चंद नारंग आदि महापुरुष आया करते थे और भाषण देते थे। बक्षी सर टेकचंद जी शायद इसलिए नहीं आते थे क्योंकि वे पंजाब हाईकोर्ट केजज थे। कैसे थे वे दिन, कैसा था वह उत्साह, कैसी थी आर्यसमाज के प्रति दीवानगी उन दिनों।

यहां पर एक बात का और जिक्र करना चाहूँगा कि पंजाब के आर्य युवकों को एक झंडे के तले लाने के लिए आर्य युवक समाज की स्थापना लाहौर में हुई थी जिसमें हम चार युवक सक्रिय थे–श्री देवराज चड्डा, श्री यश जी (सुपुत्र महात्मा आनन्द स्वामी), श्री ओकार नाथ जी (मुम्बई वाले) और मैं। मुझे याद है कि आर्यसमाज अनारकली की वार्षिकोत्सव के दिनों हम अपना विशेष अधिवेशन करते थे जिसमें पंजाब के सभी जिलों से आर्य युवक प्रतिनिधि बड़े उत्साह से भाग लेने आते थे।

आर्यसमाज वच्छोवाली– अब आर्यसमाज वच्छोवाली की कुछ स्मृतियां। इस समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी के जीवनकाल में ही लाहौर में हो गई थी। लाहौर के चारों ओर एक बड़ी भारी मजबूत फसील (दीवार) थी जिसमें 12 दरवाजे थे जैसे मोरी दरवाजा, भाटी दरवाजा, मोची दरवाजा इत्यादि। इनमें शाहआलसी दरवाजा भी था जिसके अन्दर अनेकों बाजारों, गली–कूचों में हिंदुओं के परिवार रहते थे और हिंदुओं की दुकानें भी थी। इसके अन्दर एक गली का नाम वच्छोवाली था। महाराजा रणजीत सिंह समय की एक विशाल हवेली में यह आर्यसमाज स्थित था जो उस समय की स्थापत्य–कला का नमूना था। बेसमेंट का रिवाज तो अब चला है परन्तु आर्यसमाज वच्छोवाली में एक बेसमेंट भी था और गुरुद्वारों की भांति अनेक सीढ़ियां ऊपर की ओर चढ़कर प्रवेश द्वार था जिसके अन्दर एक मुख्य हॉल और तीन दिशाओं में तीन छोटे हाल थे जिनमें एक महिलाओं के लिए सुरक्षित था। उन

दिनों आर्यसमाज के गणमान्य सभासद हाथों में बहुत बड़े कपड़े के झालरदार पंखे लेकर उन्हें झुलाया करते थे जिससे श्रोतागण को गर्मी का अहसास कम हो और वे सत्संग में शांतिपूर्वक भाग ले सकें। एक ही समय में आठ-दस व्यक्ति साप्ताहिक सत्संग मं अलग-अलग स्थानों पर इन पंखों को झुलाते थे। साप्ताहिक सत्संग में नगर के गणमान्य व्यक्ति जिनमें महाशय कृष्ण जी, पं. ठाकुर दत जी अमृतधारा, पंडित ठाकुर दत्त वैद्य मुलतानी, पंडित हीरानन्द जी, पायनियर स्पोर्ट्स के रोशनलाल जी, लाहौर के पोस्ट मास्टर भाटिया जी, रेलवे के बड़े उच्च अधिकारी सरदार मेहर सिंह जी और ऐसे ही कितने अनेक व्यक्ति नियम से आते थे।

लाहौर में आर्यसमाज का केन्द्रीय कार्यालय, गुरुदत्त भवन रावी रोड पर स्थित था जहां आर्य प्रतिनिधि सभा का विशाल कार्यालय भी था। वहां से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, पं. प्रियरत्न जी, पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पंडित ज्ञानचंद जी आर्यसेवक, पंडित विश्वम्भरनाथ जी, आदि नियम से आते थे यदि वे लाहौर से बाहर नहीं गये हों। पूरा भवन खचाखच भरा रहता था। उन दिनों श्री देवेन्द्रनाथ अवस्थी एडवोकेट समाज में मन्त्री थे और मैं सहमन्त्री था।

वार्षिकोत्सव की धूम- इन दोनों आर्यसमाजों का वार्षिकोत्सव नवम्बर के अंतिम सप्ताह में एक साथ ही होता था। वच्छोवाली का वार्षिकोत्सव गुरुदत्त भवन के विशाल प्रांगण में होता था और अनारकली का डी.ए.वी. मिडल स्कूल लाहौर की ग्राउण्ड में और बाद में डी.ए.वी. हाई स्कूल के ग्राउण्ड में होने लगा। पंजाब भर के आर्यसमाजी नवम्बर में आने का कार्यक्रम समय से पहले ही बना लेते थे जहां उन्हें एकसे बढ़कर एक विद्वान्, संन्यासी और प्राध्यापकों के विचार सुनने को मिलते थे और साथ ही विख्यात भजन मंडलियों के भजन जिनमें चिमटा भजन मंडली भी होती थी। कविवर कुंवर सुखलाल जैसे अद्वितीय कवि भी हुआ करते थे जो श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देते थे। लोग रात के 11 बजे तक यह कार्यक्रम सुनते थे। पिछली पंक्तियों में खड़े लोग सुनते नहीं थकते थे। गुरुदत्त भवन और डी.ए.वी. को जोड़ने वाली सड़क पर भीड़ का तांता लगा रहता था सैकड़ों आर्यपुरुष, देवियां और बच्चे उत्साह से इधर से उधर जाते रहते थे-एक उत्सव से दूसरे उत्सव की ओर। वह एक दर्शनीय दृश्य होता था। अब तो बस इसकी यादें रह गई हैं। संभवत: आज की पीढ़ी को इन सब पर विश्वास करना कठिन हो परन्तु यह आर्यसमाज के स्वर्ण युग की झांकी है जो अब स्मृति शेष रह गई है।

वार्षिक उत्सव के प्रारंभ में शुक्रवार के दिन विशाल नगर कीर्तन निकाला जाता था जो सारे नगर की परिक्रमा करता था और जिसकी शान और सजधज देखते बनती थी। प्रत्येक जिले से आर्यसज्जन अपनी-अपनी मंडली बनाकर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का गुणगान करते हुए पैदल चलते थे। ऐसी मंडलियां 50 से अधिक ही होती थी। अलग-अलग जिलों से आने के कारण उनके पहनावे और बोली में भी काफी अन्तर होता था। जैसे फ्रंटियर के आर्यसमाजी और मुलतान से आने वाले सज्जन, दोनों का पहनावा और उच्चारण अपनी विशेषता लिये हुए होता था, मानो अनेकता में एकता का दर्शन हो। इस जुलूस में आर्यसमाज के प्रमुख विचारक और प्रचारक जगह-जगह प्रत्येक चौक में गाड़ी खड़ी करके वेद प्रचार करते थे। इसी प्रकार अनेक बैलगाड़ियों पर प्रसिद्ध गायक और भजन मंडली पूरी साज-सज्जा के साथ भजन गाते थे। डी.ए.वी. कॉलेज और डी.ए.वी. स्कूलों के विद्यार्थी और अध्यापक केसरी रंग की पगड़ियां पहने हुए पंक्तिबद्ध होकर चलते थे और ''हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनिया में धूम मचा देंगे'' का गान करते थे तो एक समां बंध जाता था। आप संभवत: आश्चर्य करें कि डी.ए.वी. कॉलेज के सभी विद्यार्थियों की हाजिरी ली जाती थी ताकि प्रत्येक विद्यार्थी का नगर-कीर्तन में सम्मिलित होना सुनिश्चित हो। मुस्लिम बहुत लाहौर शहर में इस नगर कीर्तन के कारण मुसलमानों के हृदय पर परोक्ष रूप से आतंक भी छा जाता था। महात्मा हंसराज जी प्राय: अनारकली में प्रसिद्ध दुकान 'भल्ले दी हट्टी' के मुख्यद्वार पर बैठकर इस शोभायात्रा का आनन्द लेते थे। गलियों, बाजारों के दोनों ओर दुकानों और छतों से भी नर-नारी बच्चे उस नगर कीर्तन को देखते थे। इस भव्य यात्रा में शारीरिक व्यायाम के करतब, गतकों के खेल आदि भी देखते को मिलते थे। वार्षिकोत्सव शनिवार और रविवार को होता था, परन्तु लाहौर के गली -मोहल्लों में आर्यपुरुषों और देवियों की प्रभात फेरिया एक सप्ताह पहले से ही सबको सूचना देने के लिए शुरु हो जाती थी। डी.ए.वी. के अध्यापक पन्द्रह दिन पहले ही सारे नगर में वार्षिकोत्सव की सूचना देने वाले कपड़े के बोर्ड सड़कों के आर-पार लगा देते थे। आज न वे दिन रहे, न उत्साह, न धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा।

-स्व. विश्वनाथ जी के आलेखों से

गौ-दान : महा-दान

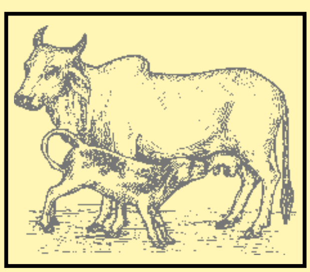

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **25,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

पूर्ण निष्ठावान् आर्य समाजी स्व. ओंकार नाथ जी

स्व. ओंकारनाथ जी की मृत्यु पर प्राप्त शोक प्रस्ताव पुराने आलेखों में से मिला तो अभी पुण्य तिथि पर छापना उचित लगा- सम्पादक

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य के अन्तर्गत मुझे 1970 में प्रथम बार मुम्बई के आर्यसमाजों को देखने का संयोग प्राप्त हुआ। तब से श्री ओंकारनाथ जी का सानिध्य एवं आशीर्वाद शतश: बार मुझे प्राप्त हुआ। मैंने उन्हें वैदिक ध र्म तथा आर्यसमाज के लिए समर्पण भाव से इन्हें तल्लीन होकर कार्य करते हुए देखा है। एक सच्चे एवं निष्ठावान आर्यसमाजी के रूप में ही मैंने इन को सदा पाया। कभी दूर से भी यह विचार मेरे मन में नहीं आया था कि आदरणीय श्री ओंकारनाथ जी अकस्मात् ही अपनी आर्य सामाजिक तथा पारिवारिक गतिविधि यों को छोड़कर सदा के लिए हमसे दूर चले जायेंगे। उनके निधन का समाचार कल श्री रामनाथनाथ सहगल जी से सुनते ही ऐसा लगा कि केवल मुम्बई के ही नहीं अपितु समस्त आर्यजगत् से ही एक और ऋषिभक्त अपना स्थान खाली कर गया हो।

इसी वर्ष 2002 के मार्च मास में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर आप दिन रात कार्य करते रहे। यह वही स्मारक है जिसको शिखर तक पहुंचाने में आपने बड़ी बड़ी योजनाएं बनाई तथा उनको पूर्ण किया। अभी भी उनके दिमाग में कितनी योजनाएं थी कि जिससे ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म स्थान 'टंकारा' पूरे विश्व में एक दर्शनीय स्थल बन सके। महर्षि दयानन्द जन्म गृह टंकारा ट्रस्ट को दिलवाने में आपका बहुत बड़ा योगदान है। टंकारा के निवासी, उपदेशक विद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य, अध्यापक एवं सभी विद्यार्थी आपके प्रति अत्यन्त पूजनीय भाव रखते थे।

जब आप आर्यसमाजों के मंचों पर बोला करते थे और आर्य समाज के गौरवशाली अतीत के संस्मरण सुनाया करते थे तो श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाया करते थे। पुरानी पीढ़ी के आर्यसमाजी अब विरले ही रहे गये हैं। आपने आर्यसमाज का वह काल देखा था तथा कार्य भी किया था जब आर्यजन तन मन धन से समर्पित होकर आर्यसमाज की सेवा किया करते थे। आप उन्हीं पुराने आर्यों में से थे। आर्यसमाज, बच्छोवाली, लाहौर तथा आर्यसमाज, अनारकली के उत्सवों के आंखों देखे दृश्यों का जब आप वर्णन किया करते थे तो आंखे छलछलाने लगती थीं। आज से कुछ ही दिन पूर्व आर्यप्रवर श्री रामनाथ सहगल जी के आदेशानुसार टंकारा में लगने वाले आर्यवीर दल के शिविर में भाग लिया। इन्हीं दिनों श्री ओंकारनाथ जी ने मुझे कि 'नैरोबी के आर्यजनों को किसी योग्य भजनोपदेशक की छ: मास के लिए आवश्यकता है। मैंने उनको आपका नाम दे दिया है। आपने वहां जाना है' मैंने कहा कि मेरे पासपोर्ट की अवधि समाप्त हो चुकी है। तब उन्होंने मुझे कहा कि पासपोर्ट यथाशीघ्र रिन्यू करवा के मुझे सूचित करें। हाय रे विधि का विधान! इससे पहले कि मैं उन्हें अपना पासपोर्ट बनने की सूचना देता मेरे ही कानों मं यह सूचना पड़ गई कि श्री मानिकटाला जी तो स्वयं ही कभी न समाप्त होने वाली यात्रा पर चले गये हैं। वर्षों से स्नेह बरसाने वाले, प्रेरणा देने वाले प्रेरणा स्रोत अचानक ही अपना वरदहस्त सर से उठा लेंगे यह तो कभी कल्पना में भी नहीं आया था। जिसका जन्म हुआ है, संसार में आया है तो जाना भी पड़ेगा। यह परमात्मा की अटल व्यवस्था है। इसके आगे सभी को नतमस्तक होना पड़ता है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में यही प्रार्थना करते हैं कि वह उस महान् दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। वह आत्मा जिस लोक भी विचरण करे शान्ति को प्राप्त हो।

– सत्यपाल पथिक (वैदिक धर्म प्रचारक) 70, ए, गोकुलनगर, अमृतसर-143001

श्रद्धांजलि टंकारा परिवार की

स्वर्ग बनाया आपने, अपना घर परिवार।
गीत गाया वेद का, जीवन का आधार।।
ओ३म् जाप, संध्या व हवन, करते काम बिसार।
काम किया सब धर्म का, नमन उन्हें सौ बार।।
रग-रग में रमा हुआ था, वैदिक धर्म विचार।
नाम कमाया आपने, कर-कर पर उपकार।।
आर्य रत्न थे आर्य जगत के, आर्यसमाजाधार।
कोई भी न समझ सका, महिमा अपरम्पार।।
श्रद्धांजलि अर्पित करें, टंकारा परिवार।
परिजन को सामर्थ्य दें, करे वेद प्रचार।।

- पं. धर्मधर आर्य सिद्धान्ताचार्य

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

आर्यसमाज की शान मुंजाल परिवार

स्व. श्री बृजमोहन मुंजाल

स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल

आज से कई वर्ष पूर्व हीरो साईकिल के नाम से जिस व्यवसाय को मुंजाल परिवार ने अपने ज्येष्ठ भ्राता स्व. महात्मा श्री सत्यानन्द जी मुंजाल के नेतृत्व में प्रारंभ किया था, आज वह वटवृक्ष के रूप में हीरो मोटो कोप लि. के नाम से प्रख्यात है। इस विश्व विख्यात नवनिर्मित कम्पनी को विश्व स्तर तक पहुंचाने का श्रेय स्व. श्री बृज मोहन मुंजाल जोकि स्व. महात्मा श्री सत्यानन्द मुंजाल के अनुज थे, को ही जाता है। आज इस कम्पनी ने मोटर साईकिल क्षेत्र में विश्व के सभी कीर्तिमानों को तोड़ते हुए विश्व की प्रथम मोटर साईकिल होने का कीर्तिमान स्थापित किया है। भारत वर्ष के कुल मोटर साईकिल व्यवसाय में आपका 75 प्रतिशत का योगदान है। उपरोक्त उपलब्धियां केवल मात्र स्व. श्री बृजमोहन मुंजाल की कर्तव्यनिष्ठा और उनके सुपुत्र श्री पवन मुंजाल की कार्यकुशलता का द्योतक है। लेकिन आज स्व. श्री बृज मोहल मुंजाल जी के स्व. सुपुत्र श्री रमन मुंजाल के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता जिनके प्रयास इस कम्पनी में मील के पत्थर के रूप में विद्यमान हैं।

आर्यसमाज के लिए यह गर्व का विषय है कि यह परिवार आर्य मान्यताओं से ओत-प्रोत है। सभी परिवारों ने अपने गृहस्थान पर यज्ञशालाओं का निर्माण किया हुआ है और प्रतिदिन यज्ञोपरान्त ही प्रातराश ग्रहण करते हैं। ऐसे आर्य परिवारों पर किस आर्य को गर्व नहीं होगा। स्वभाव में इतना सादापन और नम्रता है कि कभी किसी आर्य संस्था में पद लोलुपता के शिकार नहीं हुए, केवल अपना योगदान परदे के पीछे रहते हुए देते रहे हैं।

यह पूरा विश्व जानता है कि आर्यसमाज को ऋषि जन्मगृह जो कि कई वर्षों से व्यक्तिगत किसी के पास था और आर्यसमाज निरन्तर पिछले कई दशकों से उसे प्राप्त करने में असफल था को अन्तत: इसी परिवार के पुरुषार्थ से प्राप्त कराया गया और उसे विश्वदर्शनीय बनाने हेतु स्व. बृजमोहन मुंजाल स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जब तक जीवित रहे अपना सहयोग देते रहें। टंकारा ग्राम की मुख्य मार्ग पर भव्य दयानन्द द्वार बनवा कर उस ऋषि के जन्म स्थान को आकर्षित रूप दिया। स्वयं स्व. बृजमोहन जी ने इसका उद्घाटन किया था। आज यह द्वार एक ऐतिहासिक चिन्ह के रूप में खड़ा है। इतना ही नहीं आपकी मृत्यु के बाद आपकी दानवीर धर्मपत्नी माता संतोष मुंजाल जी ने करोड़ रूपये का दान दे योग साधना भवन का निर्माण करवाया और निरन्तर आपके परिवार से समय-समय पर दान की आहुति प्राप्त होती रहती है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के वयोवृद्ध वेदों के प्रख्यात विद्वान् स्वामी दीक्षानन्द जी जिनका कि हृदय का खुला आपरेशन होना था और आर्य समाज इस कार्य में असमर्थ दिखाई पड़ रहा था कि आपातकालीन स्थिति में श्री बृजमोहन मुंजाल जी ने अपने परिवार की ओर से स्वामी जी के पूर्ण चिकित्सा का व्यय जो कि लाखों में था को वहन किया और उनके पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होने तक अपने घर पर रखा और घर के सब सदस्यों ने अपने हाथों से स्वामी जी की सेवा की।

इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए स्व. महात्मा सत्यानन्द जी के पुत्रों ने पिता की स्मृति में महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल भवन बनवाकर एक ऐतिहासिक आधुनिक सुविधाओं के साथ निर्माण कराया जो की करोड़ रूपये से अधिक का निर्माण में खर्च हुआ। महात्मा जी के सुपुत्र श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल, श्री महेश मुंजाल, स्व. बेटी सुशम चौपड़ा एवम् बेटी नीलम थापड़ के अथक सहयोग से सम्भव हो सका। मुंजाल परिवार ने व्यावसायिक कई कीर्तिमान स्थापित किये होंगे पर ऐसे कीर्तिमानी व्यवसायी हमारे आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं। महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी का पूरा परिवार यज्ञ से जुड़ा हुआ है। इसके पीछे उनकी बड़ी बहु स्व. श्रीमती हर्ष मुंजाल जी की प्रेरणा रही है। आप स्वयं यज्ञ के प्रति निष्ठावान थी वहीं आपने पूरे परिवार को इस यज्ञ से जोड़ा। यह सचमुच में आर्यसमाज के लिए आन, मान और शान की बात है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह इसी प्रकार व्यवसाय के क्षेत्र में आने वाले समय में नये-नये कीर्तिमान स्थापित करें और उनकी आने वाली पीढ़ियां वैदिक मान्यताओं से ओत-प्रोत रहें।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 10000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **अजय सहगल** (मन्त्री)

डॉ. अशोक कुमार चौहान सच्चे आर्य सपूत

डॉ. अशोक कुमार चौहान
संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी विश्वविद्यालयों एवं एमिटी शिक्षण संस्थान तथा चेयरमैन, एकेसी ग्रुप ऑफ कंपनीज

स्वामी ऋतानन्द सरस्वती जोकि आर्यसमाज उत्तर प्रदेश के महान प्रचारक रहे तथा दानवीर श्री लाल रोशनलाल जोकि आर्यसमाज वच्छोवाली लाहौर के प्रधान थे, वे आपस में घनिष्ठ मित्र थे। इसी कारण वैदिक मान्यताओं से प्रेरित हो अपने बच्चों का विवाह जात-पांत की परवाह न किए हुए स्वामी जी के सुपुत्र श्री बलजीत शास्त्री जो कि गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक थे तथा डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर के प्रो. के साथ श्री रोशनलाल जी की सुपुत्री जोकि कन्या गुरुकुल देहरादून की विदुषी स्नातिका थीं और वैश्य कुल से थीं, श्रीमती वेदवती विद्यालंकार के साथ लाला लाजपतराय की उपस्थिति में आर्यसमाज वच्छोवाली लाहौर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इसी आर्य दम्पति के ज्येष्ठ सुपुत्र और आर्यसमाज की तीसरी पीढ़ी को नेतृत्व दे रहे हैं डॉ. अशोक कुमार चौहान। आज यह भरा पूरा चार भाईयों का सम्मिलित परिवार है, जिसमें डॉ. अशोक कुमार चौहान के साथ आनन्द, अरूण एवं अजय डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली में रह रहे हैं। पूरे परिवार को डॉ. अशोक कुमार चौहान एवं उनकी संस्कृत की विदुषी पत्नी डॉ. अमिता चौहान का वरदहस्त प्राप्त है।

डॉ. अशोक कुमार चौहान 1967 में पश्चिमी जर्मनी (आजकल जर्मनी) में प्लास्टिक एवं कैमिकल इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएट करने हेतु गए थे तो आप स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, ला. रामगोपाल शाल वाले एवं पं. प्रकाशवीर शास्त्री का आशीर्वाद लेकर गए। शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त आपने ही अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर कार्य करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही वर्षों में आपने जर्मनी के प्रथम प्रवासी भारतीय उद्योगपति होने का दर्जा हासिल कर लिया। आपकी कम्पनी में 5000 जर्मन मूल के व्यक्ति कार्य कर रहे थे।

डॉ. अशोक कुमार चौहान अपनी इस सफलता का सारा श्रेय अपने माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों एवं आर्य संस्कृति की मान्यताओं को ही देते हैं। भारत हो अथवा विदेश प्रतिदिन यज्ञ करने वाले डॉ. चौहान अपने देश के प्रति निष्ठा को नहीं भूले और माँ के आग्रह पर भारत वर्ष में शिक्षा के माध्यम से समाज परिवर्तन का महान कार्य करने के लिए पूज्य दादाजी तथा माता-पिता के नाम से एक ट्रस्ट के नाम से स्थापित किया और प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालय दिल्ली स्थित साकेत में 1991 में स्व. श्री रामनाथ सहगल की गरिमामयी उपस्थिति में प्रारम्भ किया। आज एमिटी शिक्षण संस्थान के दिल्ली तथा दिल्ली के आसपास असंख्य शिक्षण परिसर हैं, जिनमें लगभग 100000 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के विषयों पर विशेषज्ञ तैयार किए जाते हैं। आप भारत में विश्वस्तरीय शिक्षा देने के लिए विशेष रूप से ख्याति रखते हैं। आज आप के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा के अतिरिक्त शीघ्र ही अमेरिका एवं भारत में एक मेडीकल कॉलेज भी स्थापित होने जा रहा है।

डॉ. अमिता चौहान
चेयरपर्सन, ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल्स्

नि:संदेह डॉ. अशोक कुमार चौहान का यह प्रयास भारत माता के प्रति ईमानदारी और राष्ट्रभावना का प्रतीक है। वह अपने वक्तत्त्व में बड़े खुले हृदय से इस बात को मानते हैं कि मेरे माता-पिता ने बाल्यकाल में जो वैदिक मान्यताएं घुट्टी के रूप में दी थी, सारा श्रेय उन्हीं को जाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में तथा समाज सेवा के क्षेत्र में कुछ कार्य कर सका।

उपरोक्त उपलब्धियों में आपकी धर्मपत्नी संस्कृत विदुषी श्रीमती डॉ. अमिता चौहान एवं अनुज श्री आनन्द, अरूण, अजय का सहयोग रहता है। पूरा परिवार नित्य प्रति यज्ञ करता है और साप्ताहिक सत्संगों में श्रद्धापूर्वक सम्मिलित होता है।

दिल्ली के पास नोएडा में विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय है। निजी क्षेत्र में भारत के प्रथम प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय की आधारशिला उत्तर प्रदेश के राज्यपाल संस्कृत के महान विद्वान महामहिम श्री विष्णुकांत शास्त्री के कर कमलों द्वारा रखी गई। कार्यक्रम का प्रारम्भ स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा यज्ञ के रूप में हुआ जिसमें महामहिम श्री राज्यपाल ने भी भाग लिया और स्वामी दीक्षानन्द जी ने महामहिम को आशीर्वाद दिया। श्री राज्यपाल ने बड़ी श्रद्धापूर्वक स्वामी जी के चरण स्पर्श किए। भव्य यज्ञ का आयोजन एवं शिलापट संस्कृत में लिखा देख कोई भी महर्षि का दीवाना गौरव का अनुभव कर सकता था। बहुत भव्य 4-5 हजार प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति में कार्यक्रम में भी राज्यपाल के अतिरिक्त श्री कलराज मिश्र, श्री अशोक प्रधान, श्री जगदम्बिका पाल, श्री अमरसिंह एवं डॉ. सत्यव्रत जी आदि प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। डॉ. चौहान के नेतृत्व एवं आशीर्वाद से पूरा चौहान परिवार ही संस्कारी एवं आर्य मान्यताओं से ओत प्रोत है। सभी परिवार में प्रतिदिन यज्ञ एवं रविवार को ज्येष्ठ भ्राता डॉ. अशोक कुमार चौहान जी के निवास स्थान पर सप्ताहिक यज्ञ होता है। सभी पुत्र, पौत्र आदि इसमें सम्मलित होते है। छोटे से छोटा परिवार का स्वरूप भी इसमें अपनी भागीदारी देता है। कुछ भी सुविचार अपना कोई लेख बालक सदस्य भी सुना कर अपनी भागीदारी देते थे। इस परिवार की प्रेरणास्रोत डॉ. अमिता चौहान (अध्यक्ष ऐमिटी विश्वविद्यालय) जी को भी जाता है। आपके स्नेह रूपी आशीर्वाद से ही पूरा परिवार एक बट्ट वृक्ष की तरह एक जुट हो प्रलव्वित है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस परिवार की वेदों और वैदिक मान्यताओं के प्रति आस्था इसी प्रकार से बनी रहे और सभी सदस्य दीर्घायु को प्राप्त करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में इसी प्रकार से योगदान करते रहें।

- सम्पादक

इस शत्रु से बचो

शत्रु मित्र भी होते हैं और मित्र शत्रु भी होते हैं। शात्रु तो शत्रु होते ही हैं लेकिन देखने में आया है कि हम स्वयं भी अपने शत्रु होते हैं। हमारे अपने द्वारा किये गये ऐसे-कार्य जो हम गलती से कर देते हैं और परिस्थितियां ऐसी बन पड़ी, कि समय के साथ वही किया गलत कार्य शत्रु बन जाता है। कुछ कार्य हम सोचे समझे भी कर देते हैं जो बाद में हमारे शत्रु (दु:ख का कारण) हो जाते हैं।

ऐसे कार्य जो हम सोच-समझकर करते हैं उनमें सबसे प्रसिद्ध ओर चर्चित है। 'क्रोध' जो हम स्वयं करते हैं और उसे अपना शत्रु बना लेते हैं। किसी विचारक ने अंग्रेजी में कहा है- 'Angr is the Prize we Pay for other person`s mistake' अर्थात् हम औरों की गलतियों का मूल्य क्रोध द्वारा चुकाते हैं। क्रोध को शैतान की संज्ञा दी गई है। क्रोध के वश में होकर हम अपना आपा खो बैठते हैं। कहते है, कि आदमी क्रोध में अंधा हो जाता है। उसे अच्छे-बुरे का कुछ पता नहीं चलता। क्रोध के आवेश में मनुष्य कुछ ऐसा कर बैठता है जिससे उसे सारी आयु पछताना पड़ता है।

क्रोध का शाब्दिक अर्थ है मन का ऐसा अप्रिय भाव जो प्रतिकुल अवस्था ना होने पर उठे अभाव, असहिष्णुता ही क्रोध का मूल कारण होते हैं। ऋषियों ने जहां काम, लोभ, अहंकार को दुर्गुण माना है वहीं क्रोध को भी इसी श्रेणी में रखा है। पाप का मूल क्रोध को कहा गया है ओर 'इससे हमेशा बचकर रहना चाहिए' की शिक्षा दी गई है। रामायण में आता है कि क्रोध प्राणों को लेने वाला शत्रु है, सर्वनाश की ओर ले जाने वाला मार्ग है। एक दार्शनिक के अनुसार-क्रोध का प्रारम्भ मूर्खता से होता है और अन्त पश्चाताप से। क्रोध व्यक्ति को विचार शून्य कर देता है। क्रोधी को अनेक कुरीतियों का जनक माना गया है।

आजकल देखने में आया है कि क्रोध व्यक्तियों की नाक पर बैठा रहता है। बात-बात पर लोग क्रोधित हो जाते हैं, नतीजा यह होता है कि बात बढ़ जाती है, गाली-गलौच, हाथापाई, मारपीट तक की नौबत आ जाती है, मामला थाने-अदालत तक पहुंच जाता है। वर्तमान में दिल्ली के खान मार्केट का किस्स इसी क्रोध का नतीजा था-एक गाड़ी से रगड़ने से दूसरे गाड़ी वाले को क्रोध के कारण अपने जीवन से हाथ धोना पड़ गया।

धैर्य, संयम, सहनीशलता को आज कमजोरी माना जाता है। आज बच्चे पैदा ही तुनकमिजाजी को आज कमजोरी माना जाता है। आज बच्चे पैदा ही तुनकमिजाजी लेकर हो रहे हैं। उस पर कोढ़ की तरह फैलता, फिल्मों और टीवी पर हिंसा का प्रदर्शन नायक को गुस्सैल युवक (Angrey Man) की संज्ञज्ञ दिया जाना आम हो गई है।

ऐसा देखा गया है कि जो सबल और समर्थ होते हैं वे क्रोध नहीं करते। निर्बल ही अपनी विवशता और असमर्थता को क्रोध के माध्यम से प्रकट करते हैं। क्रोध किसी समस्या का समाधान नहीं है अपितु अपने आप में एक समस्या है। क्रोध से मानसिक तनाव पै होता है, जिससे उच्च रक्तचाप होता है। उच्च रक्तचाप को मौन हत्यारा कहा जाता ह ै। इसके बाद तो हृदय रोग ही है।

बुजुर्ग, सयाने सलाह देते हैं कि क्रोध की स्थिति आने पर एक से दस तक गिनती गिने या एक गिलास-पानी पियें। किसी पत्र को पढ़कर क्रोध आ जाये तो उसका उत्तर उस समय ना दें, आशय यही है कि क्रोध के ज्वर को शान्त होने का समय देवें। यह एक अनुभव आधारित उपयोगी सलाह है जिसे हमें अपने व्यवहार में ले आना चाहिए।

क्रोध में होते हुए कभी दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब निहारकर देखिये, आपके मुख्यमंडल की सारी आभा, कोमलता जाती रहेगी, चेहरा वीभत्स हो जायेगा। जो लोग स्वभाव से क्रोधी होते हैं उनके चेहरे पर स्थायी रूप से भ्रकुटी बनी रहती है। आप चेहरा देखते ही स्वयं पहचान जायेंगे कि व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होगा, शालीनता का अभाव होगा। व्यक्ति का चेहरा तो उसके व्यक्तित्व की झलक देता है और पहचान कराता है।

क्रोधी व्यक्ति से प्रत्येक आदमी कतराता है, दूर रहना चाहता है । परिणामस्वरूप वह अकेला पड़ जाता है। अपनी इस परिस्थिति पर भी वह क्रोधित रहता है। अन्दर ही अन्दर सुलगता रहता है, जबकि इस परिस्थिति के लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार होता है।

क्रोध पर नियंत्रण करना कोई कठिन भी नहीं। केवल आवश्यकता है एक निश्चिय, एक संकल्प करने की-'चाहे कैसी भी परिस्थितिया हों, मैं क्रोध का गुलाम नहीं होऊंगा।' जब क्रोध आने लगे तो इस वाक्य को दोहराते रहें अथवा गायत्री मन्त्र की पाठ करते रहें। कुछ ही समय के अभ्यास से आप क्रोध की प्रतीति से दूर हो जायेंगे और क्रोध पर हावी हो जायेंगे। तब आप पायेंगे कि आपका जीवन दर्शन ही बदल गया है। आपकी सोच में एक इन्द्रधनुषी बदलाव आ गया है। आपके आसपास का वातावरण अधिक सुन्दर, आकर्षक और लुभावना लगा लगेगा। प्रयोग करके देखिये। आपको इस शत्रु से छुटकारा अवश्य मिलेगा। इसी कामना और शुभकामनाएं के साथ। -अजय सहगल

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (गुरुकुल) में प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में अष्टाध्यायी, वेद, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है। सुविधा युक्त आवास, पौष्टिक भोजन, प्रातराश आदि के साथ गुरुकुलीय अनुशासन है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के आर्ष पाठ्यक्रम से मान्यता प्राप्त है। कक्षा सातवी और नौंवी उत्तीर्ण, स्वस्थ और चरित्रवान मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी समीप की आर्यसमाज के पदाधिकारी के पत्र तथा अपनी अंकशीट के साथ आवेदन करें।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

डाक टंकारा, जिला-मोरबी (सौराष्ट्र-गुजरात)-363650, मो. 09913251448

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री एवम् महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट की ट्रस्टी श्री अरूण अबरोल जी की धर्मपत्नी

श्रीमती सुधा अबरोल जी का आकस्मिक निधन

श्रीमती सुधा अबरोल

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामन्त्री एवम् टंकारा ट्रस्टी श्री अरूण अबरोल की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा अबरोल जी का मार्च 2020 को देहान्त हो गया। वे 60 वर्ष की थी। उनका अन्तिम संस्कार सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में हिन्दू शमशान भूमि ओशिवारा में पूर्ण वेदिक रीति से सम्पन्न किया गया। श्रीमती सुधा अबरोल जी अत्यन्त हँसमुख स्वभाव, मीठी वाणी एवं मिलनसार व्यक्तित्व से ओत प्रोत थी। वे अपने पति श्री अरूण अबरोल जी के साथ आर्य समाज के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों में कन्धे से कन्धा मिलाकर धर्मपरायणा श्रीमती सुधा जी ने अपने जीवन में निरन्तर शुभ कर्मो की एक लम्बी श्रृंखला स्थापित कर नारी जाति के उत्थान के लिए कठिन प्रयास किये। वे अपने पीछे भरा पूरा सम्पन्न परिवार छोड़कर गई है।

आपका ऋषि जन्मभूमि टंकारा से विशेष लगाव था और वह जब तक स्वस्थ रही निरन्तर प्रतिवर्ष टंकारा बोधोत्सव पर उपस्थित होती रही और ऋषि के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करती रही। डी.ए.वी. एवम् आर्य प्रोदशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने मौखिक रूप से श्रीमती सुधा अबरोल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि–आपने अपना जीवन प्रतिपल अपने अंदर पीयुषरूप गुण का धारण करके शुद्ध सन्देश देती रही। महर्षि दयानन्द के कार्यो को पूर्ण करने की भावना आपके मन में सदैव रही। आपके अकस्मात् निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत् को आघात पहुंचा है। लेकिन आपकी शुद्धमूर्ति चिरकाल तक हमारे हृदयों को आपके सत्कर्मो की सुंगध से आलोकित करती रहेगी।

आर्य समाज सांताक्रूज में उनकी पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुम्बई के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों के अतिरिकत विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने भारी संख्या में पहुँचकर श्रीमती सुधा अबरोल जी को श्रद्धा सुमन अप्रित किये। श्री योगेश मुंजाल जी ने उनके निधन पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए श्रीमती सुधा अबरोल को आर्य समाज की निष्ठावान कार्यकर्त्री बताया। वे आर्य समाज के कार्यो में बढ़–चढ़कर भाग लेती थी तथा उन्हें आर्य समाज की शान कहा जाता था। उनके निधन से आर्य समाज को अत्यन्त आघात पहुँचा है। हम टंकारा परिवार की ओर से परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते है।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

केवल व्यक्तिगत ही नहीं संस्थाएं भी सदस्य बन सकती हैं।

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/– रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक–से–अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

शिवराजवती आर्या
(उप–प्रधाना)

अजय सहगल
(मन्त्री)

(पृष्ठ 01 का शेष)

तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द को प्राप्त करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कहा रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यावहारिकता में लाएं। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों ओर मंडरा रहे हैं। चाहे व्यक्तिगत हों, परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस सत्य को गांठ बांध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है, ठीक इसी प्रकार वेद के सत्य पर चलना हमें पहले तो बहुत अटपटा और अव्यवहारिक लग सकता है।

सर्वप्रथम हम इसी बात पर चिन्तन करते हैं कि मानव-मानव के भीतर दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही हैं। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं। मगर ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते हैं मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाइयों को छुआ था उस प्रक्रिया को नजरअंदाज करके उस महापुरुष की ही पूजा-अर्चना शुरु कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानो बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना तो बुरी बात नहीं मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग-अलग ग्रंथों और उपदेशों को प्रमाण मानने की मूर्खता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों के एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान पूर्णतया सत्य हो सकता है। तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति काम मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है।

आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना वेद के आधार पर ही हो, क्योंकि वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है। जिस परमात्मा को लोगों ने व्यक्तिवाद, देवी-देवतावाद तथा स्थान विशेष की काराओं में कैद कर दिया है उसके बारे में वेद कहता है-

इशा वास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

(यजु.40-1)

मन्त्र में आदेश दिया गया है कि हमें उस एक परमपिता की उपासना करनी चाहिए जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। वही इस संसार का सृजन कर्ता और संचालक है। वही समस्त संपदाओं का स्वामी भी है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओं का अनासक्ति अर्थात् त्याग भाव से भोग करना अपेक्षित है क्योंकि अन्ततः यह सब कुछ उसी पिता का है।

मन्त्र में बहुत ही व्यवहारिक बात कह दी गई है। परमपिता किसी स्थान विशेष में नहीं है बल्कि वह हमें सर्वव्यापक है और समस्त संपदा का मालिक भी वही है। यह सब कुछ तोहें मात्र प्रयोग करने के लिए दिया गया है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें। मन्त्र के भावों को आत्मसात् करने से जहां एक परमात्मा की आराधना का प्रचलन होकर मानवीय एकता को आधार मिलेगा वहीं दूसरी ओर आज मेरा-मेरी का जो वातावरण बना है उससे भी समाज को मुक्ति मिल सकती है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे की वस्तु को चुराने का प्रयास करता है इसी लोभ के कारण वह सांसारिक वस्तुओं के साथ अपनी आसक्ति भी जोड़ देता है जो व्यक्ति के दुःख का मुख्य कारण है। त्याग और अलोभ की वृत्ति पैदा होने पर ही व्यक्ति परोपकारी बन सकता है। जो परोपकारी होगा उसके हृदय में ही समूची मानवता के हित की बात आ सकेगी। इस प्रकार की समस्त ऐषणाओं से ऊपर उठकर जब वह एक परमपिता की उपासना करेगा तो उसके भीतर इस सत्य का उदय भी होगा कि परमात्मा के नाम पर मैंने जो दीवारें खड़ी कर दी थी वे वास्तव में कितनी बचकानी और अहितकारी थीं। एक परमात्मा ही वास्तव में सृष्टि का सृजन करनेवाला और मालिक है वेद में अन्य अनेक ऐसे बहुत से मन्त्र हैं यथा-

.....भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्॥ (यजु. 13-4) अर्थात समस्त प्राणीमात्र की पति (स्वामी) वह परमपिता परमात्मा ही है और वह अनेक नहीं बल्कि एक है और एक ही रहेगा..... वेद की यह शिक्षा हमें एकता के सूत्र में बांध सकती है और भगवानों के नाम पर बंटने की कुप्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकती है और भगवानों और गुरुओं का गुरु वह परमात्मा ही है। एक वही उपास्य है ओर उसी की उपासना करनी चाहिए। लोक परलोक की उन्नति का आधार यही है.... व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की सुख-शांति एवं समृद्धि का यही मूल मन्त्र है। हम सभी एक ही जाति अर्थात् मनुष्य जाति के हैं और वही परमात्मा हमारा पिता है। हम कैसे पुत्र हैं जो पिता को भी भूलते जा रहे हैं। वेद में बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा गया है-

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे॥ (साम. 4-2-13-2)। **स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो**

भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ (ऋ. 1-9-9)।

अर्थात् वह परमात्मा ही हमारा माता-पिता और सुख शान्ति तथा प्रसन्नता देनेवाला है। वह हमारा ऐसा पिता है जिसकी पावन गोद हमें सहजता से उपलब्ध है। वह निरन्तर अपने स्नेह की हम पर वर्षा कर रहा है..... मात्र उसे पहचानकर उसकी गोद में बैठ जाने की जरूरत है मगर पता नहीं हमारे भीतर कब विवेक पैदा हेगा तथा हम भौतिकतावाद की इस अन्धी दौड़ से मुक्त होकर उस आनन्दमयी गोद में बैठकर चिर तृप्ति को प्राप्त करेंगे। ऐसा होने से ही व्यक्ति के भीतर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना पैदा हो सकेगी तथा मानववाद की स्थापना होकर प्रेम और सौहार्द की पवित्र गंगा बहेगी। यदि वास्तव में ही हम एकता स्थापित करना चाहते हैं तो वेद की शरण में ही जाना होगा। जहां कहा गया है-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे संजानानां उपासते॥ (ऋ. 10.19.2)

अर्थात् हम सभी मिलकर चलें, मिलकर बोले, हमारे मन एक हों और जिस प्रकार हमारे पूर्वज देवत्व से परिपूर्ण होकर अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में रहकर जीते थे, हम भी उन्हीं का अनुसरण करें। यह ऋग्वेद के संगठन सूक्त का मात्र एक मन्त्र दिया गया। वास्तव में यह पूरा सूक्त हमें प्रेम और सौहार्द के साथ मिलजुलकर रहने की शिक्षा देता है। इन भावों को यदि सभी लोग आत्मसात् कर लें तो आज की आपाधापी में भी स्वर्ग सा सुन्दर वातावरण बन सकता है। यह मन्त्र परिवार, समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व को एकता का महान सन्देश दे रहा है।

यदि हम अपने पूर्वजों की बात करें और मात्र औपचारिकता भर निभाने के लिए उन्हें न मनाया जाए तो हमारे यहां का प्रत्येक पर्व एक दिव्य सन्देश देता है और मैं समझता हूँ कि श्रावणी पर्व को तो एक राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि यह पर्व किसी प्रकार के सम्प्रदाय की बात नहीं करता है बल्कि इसका लक्ष्य है कि हम परमात्मा की वेदवाणी का मनन-चिन्तन करें और तद्वत् अपने-अपने जीवन का निर्माण करें। वेद स्वयं ज्ञान का प्रतीक है और ज्ञान रूपी आंख हम जब तक अपने भीतर पैदा नहीं करेंगे तब तक निश्चित रूप से अज्ञानान्धकार में भटक कर अनेक प्रकार के दुःख और कष्ट भोगते रहेंगे। केवल वेद का सन्देश ही सार्वभौमिक और सार्वकालिक है इसलिए इसी को आधार मानकर आज के विषासक्त वातावरण से निजात पाई जा सकती है अन्य कोई मार्ग नहीं है। सत्य से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है और वेद ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है अतः आज की प्रत्येक समस्या का समाधान हमें वेद में ही ढूंढना होगा। वेद ही समूची मानवता को एक सूत्र में पिरोने का आधार है इसलिए आज वेद के सत्य को हृदय से स्वीकारने की जरूरत है। श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी में है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सत्य के पक्ष में करके आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूकर अपना और समूचे विश्व के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करे। हम वेद के आधार पर आज की दिशाहीन मानवता को कुछ स्वर्णिम आयामों तक पहुंचाने की दिशा में कुछ सार्थक कार्य करके पुण्य के भागी बन सकते हैं। बस इसी भावना को आत्मसात् करना ही इस पर्व का दिव्य सन्देश है।

मनुष्य शरीर, मन, इंद्रियों से जितने भी अच्छे बुरे कर्म करता है। उसे उन सबका फल सुख-दुःख के रूप में अवश्य ही मिलता है। **-स्वामी दयानन्द**

मेरे प्यारे देश!
तुझे बार-बार प्रणाम

मेरी भावनाओं के केन्द्र
मेरे मन की धड़कनों के सहारे
मेरे प्यारे देश!
तेरी पावन धरती का कण-कण
मेरी आंखों का उजाला है
तेरी उज्जवल संस्कृति को
मैंने अपने जीवन के सांचे में
श्रद्धा की गहराई में उतरकर ढाला है
मैंने तेरे अनमोल प्यार को
प्यार से हृदय में बसाया है
जीवन के पग-पग पर
तेरी भक्ति का मधुर गीत गाया है
तेरी उन्नति-मेरी उन्नति है
तेरी जागृति-मेरा जीवन है
तेरी शक्ति-मेरा गर्व है
मेरा सब कुछ तेरे लिए है
तेरा सब कुछ मेरा है
मैं तेरा हूं, तू मेरा है।
तू ही मेरे जीवन का सवेरा है
तुझ से बढ़कर मुझे कोई प्यारा नहीं
तेरे बिना जीवन का कोई सहारा नहीं
मेरा जीवन तेरे अर्पित
मेरे जीवन का उद्देश्य तेरी सेवा
मेरा कर्तव्य तेरा विकास
तेरे विकास को आवश्यकता है मेरे पसीने की
मेरा पसीना, मेरा खून तेरे लिए है
तेरे विकास के लिए है
तेरे लिए जियूंगा, तेरे लिए मरूंगा
तुझे बार-बार प्रणाम

-वेद प्रकाश शर्मा अतुल (गुजरात)

जिन्दगी आसान नहीं होती,
इसे आसान बनाना पड़ता है....
कुछ ''अंदाज'' से,
कुछ ''नजरअंदाज'' से....!!

टंकारा समाचार अगस्त 2020
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-08-2020
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.07.2020

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय